- पंक्ति अन्वार -

हिंदी के मंगल काव्यों की

सामाजिक पृष्ठभूमि
(२२२)
- पंच चम अथा य- 
- हिंदी के मंज़िल का व्यंग की सामाजिक पुस्तक भूमिका -

1) श्रीकृष्ण का अलंकारक वर्णन ।
2) काव्य की सामाजिकता का आभास ।
3) सामाजिकता में विवाह का अन्य साहसरण स्थान ।
4) विवाह संस्कार में आवश्यक विषय ।
5) मध्ययुग की सामाजिकता ।
6) श्राममण वर्ग की सामाजिक महत्ता ।
7) मंगल काव्यों में क्षैतिय ।
8) मंगल काव्यों में शासीर ।
9) मंगल काव्यों में नारी ।
10) समाज में नारी का स्थान ।
11) मंगल काव्यों में प्रतिवेदित विवाह की भिन्न मित्रता विषयों के अर्थ ।
12) लगाई ।
13) टीका ।
14) लगान लिखवाकर भेजना ।
15) बेवीपूजा ।
16) कहीं तेज चढ़ाना ।
17) चर की समझ ।
18) सोहरा भान ।
19) तोरण बनाना ।
20) मंड़प ढाना स्वयं वेदिका निर्माण करना ।
21) पारिप्रेय ।
22) अतिशयदंशन ।
23) सप तपकी ।
24) जूता खेलना और गाली गाना ।
25) दंड देना ।
गत सो अध्यायों में हिंदी के मंगल काव्यों के 'भावमय' और 'कलापक्ष' का विचार किया गया है। इस अध्याय में उन मंगल काव्यों की सामाजिक पुरुषभूमि का विचार करने का उद्देश्य सामने रखा गया है। कबीर सामाजिक होने से उसकी कलाकृति पर नक्तारीय सामाजिक मानदंडों का असर पड़ जाना सामाजिक है। मंगल काव्यों का नंबर विवाह से होने से और विवाह समाप्त का एक अभिव्यक्ति और आवश्यक होने से उस पर लिखा गया काव्यों में भिन्न भिन्न सामाजिक रूपांतरणों का प्रतिवेश पड़ना विशेष ती कहे है।

क्रुणा का अलोकितस्व

क्रुणा को भारतीय जीवन में प्रधान स्थान मिलता है जितना मराठी पुरुष-सम
राजवंश को भी न मिला। वहों के अवतार माना जाता है कि वे भी अवतारी के श्वेत में क्रुणा का स्वरूप निरंतर अनुभूत, आकर्षक और अनेक विविधताओं से परिपूर्ण है। पुराणों में अनेक पुरुष, उपपुरुष भी हैं। लेकिन क्रुणा का अलोकितस्व जितना नेत्रदीपक और प्रभावोत्साही है, उतना किसी का नहीं है। क्रुणा के जीवन का यह रहस्य है कि उसमें अनुभूत विकिरण होते ही, क्रुणा वह सब सबने मुख मानव रहा। क्रुणा का यह श्वेत स्वरूप कितने अवतारों पर अधिकतयता में विद्यार्थी नहीं देता है। इतिहास के क्रुणा का जीवन प्रेरक, अनुभूत और अवश्यक भी नहीं। गिदाहारत के क्रुणा का अनुभूत गुणों के संपूर्ण है।

इसीलिए जब वह से विद्वेषिताओं उस पर गंभीर दुहुँ गईं। सामाजिक मानव उसके प्रभावित होकर उसके नियम राजनीति विचार नहीं देते। भारतीय सामाजिक में क्रुणा की स्थान-पूर्वी समयभुग भ्रमण एवं अवश्यक यह गया। विद्वेष और प्राकृतिकताओं को समझ, सामाजिक काल की आख्यातता कर गया। निरालों के इस माध्यम सामाजिक स्थान कर गया। क्रुणा के यह विशेषता लोगों को वह केंद्रितक्षण न था वह दर्शक बना। क्रुणा

1) वेद के वैदिकावयन के विश्वासों तथा। नूतन हि नों को नन्यों, विचारित।

केंद्रादुते ।।

महाभारत — कामार्ग 28/19
(२२५)

बालकों को यह अंतरंग समझ के रूप में प्रतीत हुआ। त-खंडाश्री तोर्षा के त-खंडाश्री
की समस्याओं को रहस्योद्घाटन के रूप में मालूम हुआ। इस प्रकार कृष्ण का रूप
कोमल और मनोहर सीधेया प्रतीत हुआ। इस रूप की पुष्टि के लिये तस्वीर,
राशि, लक्षण और कवियों को विशेष नज़ारा मिला है।

काव्य की सामाजिकता का आरोप

-------------

वालतम में कवि अपने काव्य में -हदयगत मानवता का संप्रेषण कीया। यद्यपि
सर्वां सिखेर बेता है। लेकिन कवि की यह अनुभूति कथना के वंशों पर बैठ कर
कविताकाल में स्थानिक विवाद करती हुई विगुल दोनों अत्यावश्यक दृष्टि की जनमाली
बन जाती है। लेकिन काव्य की पद्धतियाँ भूमिगत मानव, उनके विकास,
मानवता होने से कवि की उपजातता तकालीन सामाजिक, शाब्दिक तथा राजनीतिक
आस्था के सहज ही प्रकट कर देती है। काव्य समग्र जगत पर नीति, उपेक्षा न होने पर श
भी समाज जगत के तत्त्वों की सुंदर शरीरियों में प्रभावित कर बेता है। इसी के काव्य का
सामाजिक आस्था नृत्य बन जाता है। काव्य के इसी अर्थ में मानव जीवन की भाव-
भरी और आस्थावान कहानी निकाह जाती है। सामाजिक सत्य कथन के यह तरंग वशनों
के माध्यम से एकीकरण हो जाता है। संगीत काव्यभाषा श्रेणीयों के भी कृष्ण
राम, उद्वा - अनिष्ट, सीता, इदृश, लक्षण इत्यादि जीवन के ऊपर और सर्व-जनसाधी तुलीयों
के प्रवर्तक अस्वीकर जीवन की नब्बीकरण कर अपनी अपनी रचनाएँ की है। विवाह
प्राप्तियों की सर्वजनन- अवस्था अनुभूत और अविवाहित वृत्ति का। विवाह जीवन का एक ऐसा प्रमाण है कि जिसका
स्वरूप करने पर रचनाओं की विवाहितियों को बहर आ जाती है। प्रातिवधाती कवियों
की वादा तो हम क्या करें। उन्हें उसमें नहीं नहीं रहा और आशाय निम्न करते है।
गोस्वामी तुलसीदास जैसे कवियों का युगिता और युगाधिष्ठा कवियों के रूप में चर्चन
करना इस अर्थ में अनुभूत नहीं है। काव्य में प्रतिवधातियों ने अपने सामाजिक आर्थिक
के स्तर पर साधना का उपयोग करते हैं भी भाविक और शास्त्रीय समस्याओं की ओर संकेत कर देते हैं।

-------------
सामाजिकता में विवाह का अन्य साधारण भाग

' पशुपति सम्बोधि ॥ देवां समाजो स्रष्टात्मानो कृपामेधितां ॥ पशुपति के समुह को ' समाज ' कहा जाता है और सर्वोपरि लोगो के समुह को ' समाज ' कहा जाता है। चीतियों में संपर्कित जीवन विवाह है तथा उनके जीवन के सामाजिक जीवन नहीं कहा जाता है। समाजविशेष्यों का कहना है कि विवाहों और व्यवहारों की विकारों व्यापक समुदाय को ' समाज ' व्यक्ति होता है। भूमिका में सब रूपों के निर्धारण किये गये हैं इस कारण सूचना की आवश्यकता लगती है। लड़कियों की भावना सामाजिकता की नींव है। इस व्यवस्था के व्यापार हो आामों को जगहितार्थ तथा अनामों को पुरुष होती है। इस व्यवस्था के भावना में व्यक्तिगत व्याख्याः उम्र आ जाते हो सामाजिक व्यक्ति दुष्कर्म व्यक्ति जाता है। उप: स्वार्थिनिवेश लड़कियों के परिवार में अाम - प्र्यायन और विवाह की भावना को उपन कहते है।

कुछ उसी समाज का एक भाग है। लड़कियों जीवन सम्बोधि के सामाजिक व्याख्याः का गायत्री है। प्रत्येक पत्नी खास कुछ जीवन बनाने में मद्दत होते हैं। क्योंकि लड़कियों जीवन तथा आमों सामाजिक साक्षात्कार तथा विवाहों की पूरी पर अभ्यासित रहता है। विवाह संबंधि पत्नी का साथ नित्यसाधन और शातावजा में विवाह और विवाह कुछ जीवन के लिये मान्यता है। संपर्कित नामों जीवन विवाह के जो अखंडर होता है। उच्चयुक्त जीवन समाज विवाहवाणिज्य अन्य अन्य मानना पर कुमारियाँ।

इसलिए नामों जीवन में विवाह का अन्य साधारण मान्यता है। तस्यासाधन चुनूँचुनूँ विवाह के रूप में खोजा है तथा विवाहित के परिवर्तन चुनूँचुनूँ में (होना सामाजिक नहीं) उन राव अखंडर बिन्दु माना गया है। नित्यसाधन गुरुज्ञान का व्यवस्था उनमें उनमें मानसाधारण विवाह है न करता है। कुछ लड़कियों के जो अन्याय कारण दुरुस्त हुए उनमें मानसाधारण विवाहाँ का अनुमान प्राप्त करने रहा है।

विवाह संस्कार में आपातक विवाह

त्रोहाक निवास में साधारण विवाह

गुरुज्ञानो में इस दृष्टि से विवाह करने पर विवाह विवाह निवास है। पारस्पर
(२२१)
गुड़यसून में २० विषयों हैं तो वौषाण मुहाफ़ज़ विवाह की २५ विषयाँ हैं। अन्य
सूची में इस संख्या में विवाहक विवाहदेवता है और
साथ साथ विषयों में भी विवाह होता है। गुड़यसून में इसलिए कहा गया
है कि 'जनवर-बर्माओँज़ वर्मा विवाहता नवन विवाहदेवता प्रतीयायु।' विवाह में जनवर
वर्म और गृह वर्मों का वहास करना गिद्ध है। क्यों कि जेसा न करने पर तोग
वर्मशाखीय विषयों का उत्तरकर करेंगे और वे शंका का अनुसरण करेंगे। यहाँ विवाह
में तामानिकता का प्रवेश होता है। उसी तार अन्य मंशार कर्त्तिवर्मनों की मायंदल
संख्या में बढ़ते हैं तो उनकर करते हैं लेकिन उपन्यास और विवाह संस्कार में कर्त्तिवर्मनों
की उपस्थिति व्यापकर रूप से आकर्षक नहीं है। विशेषतः विवाह संस्कार कर्त्तिवर्मनों
की उपस्थिति के लेखे आकर्षक रहता है उतना उपन्यास संस्कार नहीं है।

गाम-विषय: निम्नलिखित विषयों के सुनों में नाम-यता ही है।

१) वांदमन २) मेजवरचन ३) गुणवत्ताधार व ४) वर गांव ५) गुरुवर ६) विष्टर
दान ७) कन्यावान ८) अखतरोपण ९) लांक गंभीर १०) आखतिर रूपण ११) मिलक
करण १२) वर गुण १३) अक्षर फिक्षण १४) मंगल गुप्त बीतन १५) गुप्तपीत पृथ
१६) वर और गुण का उत्तरकर प्रारंभ बंधन (प्रभी) १७) अखतरोपण १८) तक्षी
पार्वती - शाय पृथ १९) कामनाधार २०) विवाहो दोष २१) सप्तमहु २२) गुप्त प्रवेश
दोष २३) पृथियान २४) इंदुरुका न उपयोग २५) पृथियान २६) शून्यप्रवेश
२७) संरक्षण २८) अमालरोहण २९) घुटोक्तर (३०) घुटोक्तर ३१) देव के लायण
और संपूर्णाधार ३२) आचार्य विकास ३३) विवाह प्रत ३४) विवाह समारोह
३५) चतुर्थ करण।

विवाह की की विवाह की विषयों के साथ विवाहक विवाहक विषयों में सोटी सूचान्तोमार ही नहीं है। मंगल
काय्यों के रूप बुझ की कम भले हैं जिनमे इन विषयों का विषया बजाना होता है।
क्यों कि इन काय्यों की प्रदर्शन और प्रेरणा शुरुआत होने से और विवाह विषय का विवाहित
करना हेतु न होने से सांस्कृतिक विषयों का वर्णन कम होता है फिर भी इस वात को
मानना ही पड़ता कि कल महाक्षेत्र विषयों के विषयों से वापस आये नहीं रहे हैं।

--------------------------------------------------------------------------------------
मध्य युग की सामाजिकता

मध्ययुगीन सामाजिक जीवन में दो प्रकार के वर्ग विभाजित थे। सूत्रों के अनुसार व्यापक वर्ग का पालन करनेवाला एक वर्ग और जाति, बंटा, ब्राह्मण भावनात्मक भक्ति का दूसरा वर्ग। उस समय समझ में वर्ग का महत्व माना जाता था और वर्ग का नेतृत्व करने का काम व्राह्मण वर्ग करता था। इस व्राह्मण वर्ग को तक्षतीन सामंतों का सहयोग था। इन दो वर्गों की प्रभुता समाज पर अस्तित्व थी। इनके हाथों में समाज के सारे सुझे थे। अन्य वर्गों की अपेक्षा व्राह्मण वर्ग ब्राह्मण का नेतृत्व था और अन्य वर्ग अस्तित्व थे। व्राह्मण शिक्षित होने से और शास्त्रिकता का पालन करने के स्रोत में समाज में उनका मानसिकता प्रवाह का जाना भाषाविद था। इससे व्राह्मण वर्ग विद्वानों और तात्कालिक बन गया। अन्य वर्गों से सामाजिक रूप से खुद मानने लगा। जिससे समाज में वह विभाजन की शिक्षा दूर बन गयी। उनका उपस्रोती रोशी विभाजन विधान था। उद्धरण वर्ग के नाम पर अन्याय - अपहरण करने रहे। सामाजिक ही इस अवस्था में विद्रोही छोड़ लार गूँज उठा जो भक्ति आंदोलन का प्रेरणा देता बना। इस आंदोलन ने विभाजन का तथा अन्याय का परिमार्जन भी निविदा में करने का प्रयास किया।

विवाह में शास्त्रिकता प्रवाह रहने से और मंगल काव्यों की निपटकता विवाह के शुभ अवसर पर गाये जाने वाले गीतों के लिये होने से मंगल काव्यों में व्राह्मण का महत्व दृष्टिगोचर होता है। 'विवुपयाम के साथ रूपिकी का विवाह निषिद्ध हो जानेपर सौंदर्य सपना होती है और अपने प्रियतम को अपनी दुरवस्त्र निविदत करने के लिये व्राह्मण की योजना करती है। इस प्रकार की व्राह्मण की योजना अनेक मंगल काव्यों में मिलती है।

व्राह्मण वर्ग की सामाजिक महत्व

मध्यकाल तक व्राह्मण वर्ग का महत्व निरंतर रहा है। क्षेत्र धारा में भक्ति आंदोलन जैसे आंदोलनों से प्रतिष्ठा की इस दमरू को निविदत करने का प्रयास रहा है।
(२६१)

किये गये। कुछ मात्रा में उसमें सफलता भी मिली। तेलिक समान में बारीकियाँ
प्राप्त होने से उस वर्ग का महत्व फिर भी महत्त्व मात्रा में कायम रहा। पौरोहित्य
में ब्राह्मण वर्ग ही प्राप्त था और इसी कारण राजवंश में ब्राह्मण देवता का
संस्कार भी किया जाता था। ब्राह्मणों के आधीवाद अनेक प्रसंगों में ले लिये जाते थे।

राजा दशरथ के यहाँ विवाहित राम भिक्षा मार्गने के लिये आये। वाराणसी
विवाहित का वचन युनकर अवकृष्ट हो गया। इस समय विष्णुजी ने दरबार को
समझाया और राम को बोले के लिये भाषा किया। विष्णु महात्मा युनि होने पर
भी रघुवंश के पुरोहित थे। राजवंश में विष्णुजी की बड़ी इमानदारी की जाती थी।
उस समय की राज्य पट्टना के अनुसार राजा को मार्गित करने के लिये अभ्यंत सिंह
मंडल था। यह अभ्यंत सिंहों की संख्या कार्यकारी समीक्षा (Executive Council.)
थी। तेलिक अभ्यंत संख्या बतावे भी होने से राजा की दृष्टि से कोन्हक थी। इसलिये
अगर राजसंस्था बिगड़ गयी तो उसपर गरीब मानी गयी सामाजिक संख्या अनुसार
किस प्रकार समाप्त होकर । इसलिये इस अभ्यंत संख्या पर अभ्यंत कीमत मंडल था। वैराय
शील और ज्ञान संपन्न , भौतिक और लोकिक व्यवहार में रस न रहने वाले, प्रसंग
विशेषतः राजकिया-प्रसाद पर जीवन निवार करने वाले और राजसंस्था के प्रसंग विषय
में पर्याप्त न करनेवाले विद्वान का इस मंडल में सामायिक था। तबः स्वाधीन निर्देश
महामुनि विष्णु इस अभ्यंत-कीमत मंडल के प्रमुख थे। विष्णुजी का शब्द विशेष रूप

1) जबहि मुनीस महीसहि कचु हुनायड़।
भयू सनेह सत्य बस उत्तम आयड़।। जानकी मंगल।।२४।। पु. १०

1) आयड़ न उतस विशिष्ट लिपि बदु महि नुप सममायाम
कौं गार्षुमत तप तेज़ कचु रघुपृति प्रमाण जनायड़।।
वैरण ब्रेएः गुरवचन मुनिकर जोरिं कह कोशल चने।
कह-नामिनशण गुजान प्रमुह सो उद्वित नहिं बिनती यनी।।

जानकी मंगल।।२५।। पु. ११।।
से गोरवारित होता था । रामचंद्रजी को बन जाने की आज्ञा होने के बाव निफाल 
से आये हुए भरत के प्रस्तोत में ब्राह्मण बन चोरना अभाव कर पाया माना जाता था । 
ब्राह्मण की महत्ता के और कमजोरता तथा अन्य प्रकार के शाक्तियाँ जाने के आदर पर 
बुरे से बुरा कर्म कर देने पर भी ब्राह्मण की दशा देना अथवा मारना बड़ा पाप माना 
जाता था । 'ब्राह्मणो नांतरः' इस प्रकार के बचन भी इसके लिये उपेक्षक हो 
सकते हैं । कई कवियों ने ब्राह्मण को लोभी समाज का भी बरसन किया है । रामलता 
के 'कृष्णी मंगल ' में कृष्णी एक ब्राह्मण को बुलाकर उसकी बुढ़ दंडिता देने का 
अवसर सर्वत्र भावना स्वरूप आदर की गई है । दक्षिण सनक ब्राह्मण को अन्तर्भाषा गाए है। लेकिन इस 
लोभी समाज के साथ आदर की भावना भी प्रदर्शित की गई है । 'हीरामिश ' ने 
अपने कृष्णी मंगल में लोम के साथ ब्राह्मण के प्रति आदर की भावना भी दिखाई है। 
अन्य मंगल कवियों में ब्राह्मण की योजना कुबे के यहाँ जाने के लिये हुर्र है जो श्रीमद- 
भागवत के अनुसार है । लेकिन कई कवियों ने इस ब्राह्मण विवेक की योजना प्रसण्ण 
के यहाँ विवाह की निकलित करने के लिये कही है । इस प्रकार के परिवर्तन की है फिर 
भी ब्राह्मण की विवाह विवेक में अत्यावश्यकता इससे पुरूष होती है। कवि विधुवास 
ने 'कृष्णी मंगल ' में ब्राह्मण की योजना प्रसण्ण के यहाँ की है । प्रसण्ण उसका 

4) कर्कलन ब्राह्मण बने -हरे रामेश कर्कलन ।
कर्कल-नाथ-दरियावा तेना पायो विद्विषित । वि. रामा, अयोध्या स्लो ४४

5) तो हिंदू वसना बड़तेरी । तब हुज मन भयो अनवं ।
आज पायो मे परम अनवं । कृष्णी मंगल , पृ ११

6) भूषण कनिक युक्तनाथ माल । लिख चीथी तापि मुक्ती समेत । गहि राहि 
चरन जहाँ कृष्ण हैं । कर जोर के हीर चितवे युगल । दीया सखारी 
बुझि दाय । कीड़ इतनी बात मरे लिये तेन । सं. मंगल , पृ १५

7) मगन ध्येयो पिसपिल निररप सुन पुष्पो अंग न मयो ।
विधुवास कुत सं. मंगल । पृ. ११
(२२२)

स्वागत करके उसने उसके भोजन का भी चंदल आयोजन किया। भोजन का आयोजन ही नहीं तो दर्शन भी देता है। इस प्रसंग से बिभुपाल जैसे अनुभूति के यहां भी भ्रामणधारीकों का गोरब होता था। यह भी हो सकता है कि विवाह की आनंद की वार्ता ते आनेवालों का स्वागत करना अनुचित नहीं। विवाह की समस्या ने कुश्तिया के यहां भी भ्रामण में। उसका कृपा के यहां जो आतिथ्य हुआ उसका वर्षन बंगाल काहरों का रूप चंदल आयोजन है। पकवानों का वर्षन बहुत ही रोचक है। संगीत रनिमंगल के रचितवाक्य उसने इंदरमन बी भ्रामण की इस तोमर वृन्द से आक्रोष हुए बिना नहीं रहे हैं। भ्रामण विवाह कार्य में मथ्युक्त का काम भी करते थे। वृट्ट - वरों के पशी में एक पथ का समाचार दूसरे पशी में पुरुषार्क विवाहके गार्थ में युक्तता लाते थे। श्रीमदभगवत में संबंधित रिलाशन वृन्द के पास भ्रामण की योजना करती है इसमें दूसरा भी एक महत्व का अभाग है। उस समय परिवारिक जीवन में नारी की पराश्रीता जानकर अपने विश्व को रथ की धुन की पूर्ण अगर करनी हो तो फिरी विवाहप्रवाह विभिन्न की ही योजना करना कृपण उचित था। इस दूषित से भ्रामण उस प्रकार के विवाह को पात्र थे। वास्तव में संजोग वाक्य होना सामाजिक दृष्टि से हेय लगता है। फिर भी यहं का संध्यावाहक प्रेम की कठिन अवस्था का है और इस समय संघारित प्रकृति की ही योजना समुचित है। नंदवास के समाज में भ्रामण का अंत: पुरुष प्रेम का विविध वहै। भ्रामण को इस प्रकार अंत: पुरुष में बिना किसी रोक टोक के आवाहन की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो। संसार-व्यवहार के अतिरिक्त यह उत्क्रमण भ्रामणों के बारे में सार्थक है। ऐसे भ्रामण सत्सनायते और देश की संस्कृति के संग्रह के माध्यम से एक अनुशासन पूर्ण संस्कृति का आदर-दृष्टान्त करते थे। इसलिए समाज में उनके विलास खर वृन्द होने पर भी उनका विशेषता-प्रियता सुरक्षित रहा।

---

8) छद रस मिठा रस आँच विश्रन विभ्र भोजन पवारो दरवाने विज देह। वदिखना कुंजन पुरीफिर पायो।   विकमरस हु. म., प. १२।
9) पशी मैले खारी के देख कृष्ण को जात। आनुर आओ तोक, दूषित उद्ध अवाय।। संगीत रनिमंगल - प. १०।
10) भिन्न भिन्न विज्ञवर चलों पल्लों आंत: पुरुष आयो। नंदवास प्रभावली हु. म., कविता ७९, पु. १८४।
(२२२)

मंगल काव्यों में कौशिक

----------------------

१०

श्रीमदभुगतबुधगीता के अनुसार रश्का का काम कौशिक करते थे। शिवपुराण, नारासेंग, कंस आदि कौशिक थे। दृश्य हो के उन्हें 'अशुर' कहा जाता था। कौरव भी अशुर कौशिक के ही थे। समाज में उस समय दो प्रकार के राजा राजा के दर्शन होने के भाव शिवपुराण आदि राजा राजा के दर्शन का वर्णन मिलता है। कंस का वचन करने के बाव मधुरा का राज्य वास्तव में कृष्ण को मिला था। तेजी उसका खौफ न करके उसने उसके उपासन के धार्मिक सीमा दिया। वास्तव में महावान जाति भेद से परे है।

फिर भी व्यवहार में जो आभीर की भूमिका ते तेजी थे उसका पालन करने के लिए जी राज्य गद्दी का खूफ न किया होना संभवनीय है। उन्होंने कुछ ही कहा कि - यद्यपि इतिहास स्त-तवकल्ले जगती - केश लोगों का अनुकरण सामान्य लोग करते हैं।

कौशिको के बारे में विशेष वर्णन मंगल काव्यों में नहीं मिलता है।

मंगल काव्यों में आभीर

----------------------

वेदिक या आर्य धर्म में चर्चा में केश वैश्वत्त साध्व नहीं है। सामाजिक व्यवस्था के अनुसार यह विन्धन विन्धन गुट रखते गये हैं। भाली में केश कौशिक वैश्वत्त साध्व का वर्णन नहीं होता है। हमारे संस्कृत भाषा नाटियों में पौड़ा हुर है और समाज ने उनका उत्पत्त ही गोरव किया है। कृष्ण ने भी आभीर जाति में पौड़ा होकर इस दृष्टि का समूह बना किया है। फिर भी मंगल काव्यों में आभीर की प्रति तुष्टि विशारद गर्दी है। विश्वास के अनुसार उसका केश कौशिक के हेतु को इसे की अपने पिता की बात जानकर बोल उठता है और उसी अति विशारद का सुर प्रभावित करके अपनी पूर्ण स्ना में संस्कृति प्रकट कर देता है।

-------------------------------

११) शौर्य तेजों दृश्यवास जुगुच्छ वस्तुत्तास्मायुम। वात-मीमांस मर्यादा धार्मर्य धर्म धर्मावनमः।

गीता अध्याय १८ श्लो ४३

१२) वौ पंव जगैलोकों के साहेब-देव आशुर स्वरूप ।

गीता अध्याय १६, श्लो ६

१३) गीता, अध्याय १ हस्तक - २१

१४) स्वयंबुधा चमके परो युक्तक हेतु बात। नाश तुम युक्त है ना तुम तात न मात।

जिनकी तुम अललूत करो जो है निराकर लक्ष्य। और पूरा कह भित गये दुधो अहिर गवार।

कौशिको मंगल - प. ७
(२११)

इस प्रकार का वर्णन अन्य रूप के काव्यों में भी मिलता है। भाग्यते में स्कसी विशेषता करता है। तब उसका कारण स्की कुष्ठ से दुःखने करता था इस प्रकार विषय स्त्री गया है। रामराय महावान कहते हैं कि - 'कुष्ठ ग्वालों के साथ रहते हैं और वेषु-वाचन करते हैं। रामराय का स्की विशेषता स्की विषय' है। संसार है कि इन कवियों ने कुष्ठ से और पर्यायस्थ आमीर जाति से जो विरोध याने हीनता विषय है। इसका कारण स्की के इस भाषण से काव्य में अविक रोककर और नाट्यमयता आये।

कथन है कि स्कसी हर्ष काव्य में स्की के विशेष से भ्रष्ट मयता और संभर बढ़ गया है। इस प्रसंग से स्कसी की 'विरास्त-भाषा' की लीलायत भी बेहद हो गयी है। और शूंगार की (विरास्त) पुष्टि करने में सहायता हुई है। अतः आमीर जाति से जो कामगार विरोध या हीनता विषय वही है वह जातिनक न होकर प्रसंगनिक है।

मंगल काव्यों में नारीः 

मंगल काव्यों में नारीः का दर्शन राजशाही के मंगल काव्यों में होता है। मार वाह में हादू और मुसीम दोनों शर्मा के नारीः हैं। उपमेय में भ्रात्सना के पशि नारीः की ही प्रवीणता है। तब नारीः का काम केवल हजार मबाने तक सीमित नहीं है। गुरुजय व्यक्तियों में नारीः का विषय देना कुष्ठ माना जाता है। विषय प्रवर्धन के अवसरों पर निर्माण बोलना और लाभदायक लोगों को सकंदुर कर जाने पर उनके हाथ उत्तान तथा भोजन कर बुकने के बाद जून बटोरना नारीः का काम है। इसके बारे में अनेक प्रकार नारीः है। संस्कृत में इससे ही मिलता जून वपाधित मिलता है। - 'नरार्णा नारितो नूतिः पक्षिपाचेत वापसः।। प्रकाश्च शुभालोकस्तु कवितामित्रस्तु सपनिनन्दायू।।।' शिक्षकों के यहाँ योगौत नारीः के लिये नारीः की व्यवस्था रहती थी। विषय प्रौढ़ का पानी छोड़कर अन्य सभी कार्यों में नारीः की सहायता ही ली जाती थी। अजबका यह प्रकार विषय रूप में मारवाह में नली विषय देती है। अन्य प्रौढ़ों में नारीः की उत्तान महत्त्व नहीं दिया जाता है। उसके विशेष नारीः में 'नारीः महत्त्व का उलेख मिल जाता है।

15) स्कसी कहता है - ' ग्वालकों नारीः घोषि रस तंगत। वेषु-वाचनमें निपुष्ट निर्नत 144।। कवि - रामराय महावानू, स्कसी मंगल - पृ. 145.
(२१४)

समाज में नारी का स्थान

मैं समाज में नारी का स्थान काफी ध्यान देने के कारण वेदीक परिपरा का विचार अनिवार्य है। गुरु साहब में नारी का महत्व वेदीकों ने निर्वाचित स्थान पर पाया माना है। दुहिता, पत्नी, और माता द्वारा तीन स्तंभों में सब का महत्व था। जयेन्द्रप्रसाद जाया ही पर हे यह भावना मैं जगतांतर प्राप्त कर बुझी थी। धार्मिक कुलों में उसका साथ आवश्यक माना गया था। वेदीक काल यदि प्राचीन काल था और उस समय अपनीक यज्ञीय अर्पणार्थ से लिपित माना जाता था। उद्यान से उसकी शिक्षा का प्रबंध हुआ करता था।

उपनिभाषाक विद्वानों के दृष्टि से गोरखा का काल था। उस काल में उनका उपनयन संस्कार किया गया था और उपनयन के बाद उनकी शिक्षा का विशेष प्रबंध किया गया था। इस शिक्षा का अनुमान तत्त्वातीत नारियों के वैष्णव विकास तथा गैंडी गृहीत के अंतर स्वयं प्रतिफलित होता था। इनमें श्रमवादिनी विद्वानें विशेष थीं। बुढ़वार्षिक उपनिषद में गार्गी ने यज्ञका द्वारा लेकर भारतीय तत्त्व-विद्वान देशस्थापन के प्रतिपादन में अपना नाम अमर कर बिया है।

16) नारी रत्नामो आचारो दर्पणबीमिए हय। राजस्थान की जातियाँ। ले।
शहुन विचारों एवं शास्त्र सम्पत आवे साथ।। बजरंगलाल लोहिया, पृ. १५२
17) नरमें नारी पंखायें कोळ ,
पानीमें कैद तारों , तीनों दग्नावाज।।
1८) पंचतत्र - काशोकुंशीयम् - प्रासादिक श्लोक १४
1९) वेदीक सहिष्णु और संभवत - जार्यार्थ बलवेंद्र उपाध्याय , पृ ४१९
2०) अयोध्या हर्मण्यो जो पत्नीं ' ते। ब्रह्मण - २ - २ - २ - ६
उपनिषदकाल के बाद स्मृतिकाल और पुराण काल खिलों के पराशीतन का काल है। 'पिता रक्षा कोमारे भरता रक्षा योग्य' न की स्मृति महत्व। अगर यह पराशीतन समाप्त हो गया है, तो विद्वान विचार कर दे हैं दुस्कुश नहीं होता। इसलिए यह आधिक पराशीतन जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना प्रमुख पासक उसका जीवन क्षेत्र अर्थात् प्राप्त हो गया।

स्मृति काल का विचार करते समय स्मृति मंगल के स्मृति पराशीतन विचार होती है। स्मृति ने विशेष होने पर स्मृति विचार हो गयी और पर में समझाया के सिया उसे किसी भी सहायता न मिली। रामलता के स्मृति मंगल में विभिन्न की बारात आयी हुई वेदांक अपना शरीर छोड़ना चाहती है। मा उसे गम्भीरी की कृपा करने लगे। रामराय महावान के स्मृति मंगल में स्मृति की इसी प्रकार दुःखी हालत विचार है। विद्वान के स्मृति मंगल में स्मृति गुणत स्मृति से कुछ को बल बेजोड़ी है।

24) वरहे नीति नीर। जिसे सावन दन प्रवतन जीवन जिमीतीर। युनि निराल मिश्रवाली।

स्मृति मंगल परिषद् - सर्ग ७ , पृ ६४

---

१२३) युनी दस बात स्मृति दो होत निकलमार। तेरे पिता विचार पुरी पंचनी नह। पु १६।

२२) दुंदनुपुर आयो ब्रजराज नवेला। करने न कीने जुरी जा लीजने युन जी महारा हैता।

२३) स्मृति सोवरूप दरि करीने की। स्मृति मंगल , पृ ४।

२४) वरहे नीति नीर। जिसे सावन दन प्रवतन। स्मृति जीवन जिमीतीर। युनि निराल मिश्रवाली।

स्मृति मंगल परिषद् - सर्ग ७ , पृ ६४।
(२२५)
अपना शरीर छोड़ने को उद्युक्त हो जाता है। अंत में गुप्त स्वभाव से रक्षा भ्रमण को क्रृष्ण के यहाँ वह भेजता है। वह बुढ़े को अभावित करकर अपनी अवश्य को कोसती है। नंदवा का रीतिशिष्टता के अपनो जाति की व्याप्त काल कुछ प्रकट करता जुड़े कहता है - 'जो कहूँ तपत - उसास, उदास वदन ते लिखा है। कर्म का पावित्र दुःख जो कारों कठिन है। नंदवा का प्रेमः द. मंगल - प. १७५ नार्तकर कोव की रीतिशिष्ट तथा तम्भा से अपने हील की बात किसी से भी कह न जाते है। मन में अत्यंत दुःखी होती है और अपनी आपात रघु के पिता किसी को भी कहने में समय नहीं होती। किये हुए ब्रत, नेम आदि व्यर्थ मानते है।

नारियों की इस मयादा के गूँ में आर्यक कारण बताया गया है। दूसरे भी कर्म कारण हो सकते हैं। लोकिनंदा और लोकप्रवास की धीरता सर्वेष्ण रहने है। अति ठीक ठीक कुल युवनतमः 'इस समाधिके अनुयाय लाज ये राजा निसर्गसे नंदवा की परंपरा और उपज्यंत्र की राजा होती है। इस विचार में उस काल की नारियों ने विक्रष का गुरु -उदय में गूँ उठाने पर भी मयादा की राजा के पिते माता पिता का घोर निर्यात भी लेखा से से स्वतंत्र किया गुहा विक्रार कहता है। पाप की अपना कर्मार समाज में दुंध्वन हुई दी जिससे किसी ने उसकी धीरता से पारिवारिक पराश्रयता का इंकार किया होगा। इस तौर पर माता पिता का अत्यन्त तोकिनंदा का स्वाभाव मानना और पराश्रय में पाप का अवसर बनायेगा इस दुर्गम से किसी की लेखावृषमुक्त विशेषता हुई होगी।

किया सामाजिक उत्सवों, यदि और समारोह में बिना किसी रोक टीक के समपतित हुआ करनी थी। विवाह वे समारोह में क्षिणों की उपज्यंत्र नारियों का अस्वाभावित मानते हैं। क्योंकि विवाह में अनेक विषयों में क्षिणों की अवश्यकता है। व्यक्तांत: समाजवादी क्षिणों विवाह गोत्वा गया करती थी। वास्तव में क्षिणों के संबंध में यहाँ के निष्कर्ष मयादित होते हैं क्योंकि भील कार्यों के वित्त यौनित रहने से उनमें जो नारी जोते अपना ग्राम में प्रतिविश्वित हुआ उसका विश्वास यहाँ किया गया है।

निस्लकार ने भी शब्द की तिथि ' स्वरूः' धुप से बताये है। वह इस प्रकार है - किया: स्वयंत: अग्रेषण:कृष्णः 'अर्थात् श्री में लस्ना पर्यथ होता है।
उसमें तम्बा की भाषणा सामाजिक स्व से रहती है। इस सामाजिक भाषणा से उससे गम्भीर रूप से अंधविद्या की रहस्यशाक्ति की जाती है। अपने प्रशासन का भाव आ गया होगा। अंधेरे पर धीरे अध्यात्मिकता का निर्देश होता था। इसका अर्थ यह नहीं कि अंधेरे पर की चढ़ाई दिवसों के अंतर दंगा दक्षिण और अपना मौसम नौस होती है। यह जीवन नौसर से न तो ही जीवन जीवन नौसर नहीं होते हैं। इस दृष्टि से पाणिक नागरिकों, शमीर और आत्मनिर्भर मुख्य भाव से समृद्ध होने के अनुभव अनुभव अनुभव की जाती है। जो कि अंधेरे के और अपने की दृष्टि से बदलने के प्रभाव किए बी प्रकार के समाज में। रहने से निविदा की आक्षेपकता अनुचित नहीं है।

जैन काव्य में प्रतिभापूर्वक विवाह की भिन्न भिन्न विषयों के अर्थ

विवाह विषयों में दो प्रकार की विषयों की गणना होती है। 1) शाब्दिकादेश 2) शास्त्रीय अनुसूचित। ब्रह्म और कुलानुमोदित। 'इस अखाड़ा में शाब्दिकादेश विषयों के एक सुधी के द्वी गणी है। ब्रह्म और कुलानुमोदित विषयों इस प्रकार हैं।

1) सर्वार 2) दोहा 3) लगन 4) उल्लेख 5) पद्म 6) हल्दी 7) तेल 8) घर 9) तस्ता 10) सेहता 11) वर का दोहा 12) पिता 13) दीदा 14) गाना 15) गाना 16) कंधा 17) गाना 18) मुंड विवाह आदि। इन विषयों में रहने के समय विषय वंगल काव्यों कार्यों जाती है।

1) सर्वार — मूल काव्यों में जो विशेष विवाह है जो प्रथाविवाह होने के और आय तोर पर वयस्क और वर की प्राविध मुने के सारी सर्वार का प्रसंग ब्रह्म क्रम आता है। 'सर्वार' की विशेष वातिवाह के विशेष रूप से प्रचलित थी। 'सर्वार' पश्चिम

18) ग्रथण गुरु साहिब काव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति, ली. डॉ. हरिमल, प. १०१ चप्ता संस्करण — सन् १९६७
19) राजस्थान के रीतिरीतांश — ली. श्री. सुक्वारसिंह गहलोत, पंथ संस्करण सन् १९६१
(२१८)
का अर्थ है स्थान संबंधी निष्ठव । तड़का व तड़की के माता पिता आपस में मिलकर या तीसरे भाग, पुरुष, वार्ता और किसी को क्यों में रक्षक मुंगनी तय करते हैं । इस समय तड़का तड़की की आयु, तुल, भान, गरीर, बत, गुण आदि का निष्ठव स्पष्ट से विचार किया जाता है। जब सघनता तय हो जाती है तब कन्वा का पिता अपने लाभाधिकारिणी संग विरंगा साफ, कबड़े, गहना, नेवा, मिठाई फूल फूल तथा नारियल भेजता है। यदि सघनता न हो तो सिर्फ नव ध्वनि और एक नारियल में यह रीति हो जाती है। इसे वायुवान कहते हैं।

२) टीका - 'टीका' यह विषय मंगल कहलाता है। टीके में वर का पिता धूम धूम और धूम मुहार्दा में अपने सजावट योजना को आयोजित करता है। कन्वा के पश्चिम के तीनों वर के दल सब के राजकीय या व्यापारक के विकास करते हैं। जिसमें अपने लाभ तथा अधिकार या सामान्य नगरी मिठाई, व्यापार आदि है। राजनीति में इस विषय के लिये 'टीका आयोजन' कहते हैं। निर्देशान्वयन के अवधारणा दुर्ग अनुष्ठान मंगल नगरी में शिवाजी के यहाँ बुध नारायण दीक्षा में टीका लेकर जाते हैं।

नारायण कह युग्म भ्रम संकर, में टीका लेआयो।

टीको बोल शिवाजीकू दीक्षा, इमम सेंग बजाया।। पु. १४।
दोहे 'संभांत सिंहाशी मंगल' में टीका शब्द के लिये 'तिलक 'शब्द का भी प्रयोग किया हुआ मिलता है। भारी केसपुत्र को तिलक वापस करने के लिये कहते हैं। लेकिन भारत का कहना केसपुत्र को अभ्यास सब लगा और वह भिल गिरावट करता कि केसपुत्र ने तिलक वापस जाना संभव नहीं है। इस प्रकार अन्य मंगल कहलाते में भी 'टीके' का उल्लेख मिलता है।

---

२८) 'किंकर तैली भी नहीं हमसे दुनाई तुमने। उसके नेत्र दी गुप्तयुध की कराई तुमने।।१२१।। 'संभांत सिंहाशी मंगल', गोद विजय नायाराम चुन चुप्पिता - २१।
२९) वापस तिलक करो सेराडी कहन हमारी मानो वहाँ न जाओ आप विवर मन मैंनेव प्रहारको। 'संभांत सिंहाशी मंगल - पु. ११।
२०) 'टीका अभिनव ब्यास, श्रावणी करवाये जाय। अगर वहाँ नहीं जाओगा।
उद्योग तरे बात भी रो बायो क्या कहलाऊँगा।। ' 'सृ. रं. मंगल - पु. ११।
(२३२)

१) त्यांना लिखवाकर भेजना - इस विषय में सराह या नायन होने के बाब बर के
पितादाता को निर्देशित किया जाता होगा। यह विषय आम तौर पर सभी लोगों में
पायी जाती है। दिनज्ञान के स्रोतों में 'म' में त्यांके लिखने का साधन उल्लेख
निर्देश है। इसलिए त्यांने से पहले गुण मुद्रा के निर्देशित करनी पड़ती है।

इसे 'त्यांना दर्जा' भी कहते हैं। रायवालों के यहाँ त्यांके पत्रिका तिथि जाती है
और बाब के तहत के यहाँ भेज की जाती है। वर के पूर पर त्यांने पढ़ने के बाब
स्वीकार को बुझावा दिया जाता है। बुझावायों को भेज के बाद जाता है। इस विषय -
विषय के आदेश समय की नीति मराठ न कार्यक्रम भी सार्वजनिक होता था। तत्कालीन
पत्रिका हिंदी में यह कार्य में गोष्टियों में रखा जाता है और बाब में तहत के यहाँ भेज ही जाती
है। मालिक नियमों में इसका सम्बन्ध नहीं दिखाई देता है। इसका एक कारण इसके
स्वतंत्रता हो सकता है कि प्राचीन काल में पत्रिका में विवाद हुआ करते थे। इसलिए त्यांने की
विषय मौलिक स्थल ने निर्देश जाती होगी।

२) बेची पुलान - इस विषय का इर्दगिर्द शासकों विषयों में 'गोरी हर पूजा' के
विषय में होता है। नहरार के अन्दर भी इस विषय को पाया जाता है। लेकिन इसका
अपना स्थान 'गोरी-हर पूजा' हो गया है। श्रीमद्भागवत में स्वतंत्र पत्रिका का
उल्लेख किया गया है। कुल देवता का मित्र आम तौर पर अन्य के कारण होता है।
इतिहास में 'बीच' से मित्रता अनेक बनने से बाहरी मालिक गाथा के अन्यको तथा मध्य में
भी पाये जाते हैं। प्राचीन कुलदेवता बेची न हो उनके लिए आपम शक्ति नगरक है।

११) प्रति मुद्रा साक्षी लिखने का शिक्षाय। शुरुआती के प्राण ओर पुरुषत्वों है
विधान ।

१२) श्रीमद्भागवत कुँज अवध में सामाजिक अभिव्यक्ति - ते, डॉ. हरगुलाल, प. ५११

१३) पुजारी पुजता सहायता विशेष अवधि में निर्देशित पुजयात् । ।

श्रीमद्भागवत विशेष अवधि ५२
(२४०)

पार्वती का दर्शन लेना उचित था। इस विषेष का उल्लेख सभी सौम्यी मंगल काव्यों में किया गया है। सभी कवियों ने यह प्रसंग नाटयमयता की कारण होने वाला है यह देखकर सौवशा की चित्त किया है। क्यों चि सौम्यी दर्शन के लिये उल्लेख में लिखा गया वहां आत्मविश्वास था। कुंदनपुर में स्वात के विवाह की सन्धिवर्त तेरारी की थी जिससे कुंवर को सभी सौम्यी का दर्शन करना साधनामय नहीं होता। स्वायत नंदवास कुंवर के सौम्यी संग में गोरी के मंदिर में जाकर स्वामुल को प्राप्त न हो तो सौम्यी का उल्लेख करते हैं। । विकृवास के सौम्यी संग में यह प्रसंग है। कुंवर मंदिर में पहले ही जाकर किया गया है। सातता के स्वायत सौम्यी संग में यह प्रसंग मिलता है। उस सात सौम्यी के साथ अन्य विश्वास विवाहों की थी। हीरामोचन के सौम्यी संग में जब सौम्यी जाती है तब उसके द्वारा वह उल्लेख अनेकारे का प्रयोग करके किया है। अन्य कवियों ने भी सौम्यी दर्शन के प्रसंग का उल्लेख किया है। इसलिये गौरीहार पुजा इस गायत्री विषेश की कुलावर में परिष्कार हो गयी और जब संग के प्रसंग को नाटे का देवता देने के लिये उसका ऊपर हुआ समाप्त किया है। बहुत पुजा की यह प्रथा विवाह विवाहों में प्रति प्रयोग है। ऐसे विवाह में सातता ने भी सौम्यी विवाह के माध्यम में देवी पुजन को कुलावरत बताया है। सुरदास ने मात्र 'सभी सौम्यी विवाह' और 'राया कुंवर विवाह' में इस प्रयोग की ओर में किया है।

---

(२४) नमो नमो अवकुं से देवि विवाहधरी महावी। परि हरसरे कब जैन है कुंवर श्री
साहित्यारोशी। ११८।। हे देवि अवकुं से श्रीरामर्षि सबताक। महामायवर्धान्
जिनके शक्ति नायक।१९५।। ।. मंगल । पृ. ४

(२५) स्कमन पुजन संबंध चली मूलख चार मोदन कुः। शहर गयी भवन फिरे दशनाय।।
. मंगल । पृ. १४

(२६) अपि देवे आँबका है ता स्कमन पुजन चली। नागा विवाहके हो न सौहल चाहे
ताप स्वेत चली।। ।. मंगल । पृ. २२

(२७) ककल मीन पुजन कुः अनुमान निहारे। करैं ज्ञन उजन मान भारी।। भुक्तपरि
कंठि विसंग चराण। मनो जागितितके संग सोई।। ।. मंगल । पृ. ६०, ६१

(२८) पुजन कोटिक कुंवर अनुरागा । निज नवनुसर कुमार चरा गाणा।।
रामचरित मानस – गीता प्रेस गोरखपुर पृ. २२९

(२९) जहै देवर आकाश नगर शाहर गउ उजन। हे आई कुलावरत चली, भुक्तपरि
भी पुजन।। नंदवास निर्दाहरी, सौम्यी मंगल । पृ. १८९
5) दस्ती तेल चढ़ाना – यह विष शाकाहारियों के लिए है। मंगल कामों में इस विष का उपयोग बहुत ही कम मिलता है। इस विष में विवाह जैसे पूर्व हुई और कई उपलब्ध के लिए दस्ती और तेल चढ़ाया जाता है। दस्ती जैसे मंगल कामों में माना जाता है। रजुनामयिक के 'राम घराजीय' में और कलाकृति परिषद्' में मंगल विष करने का उल्लेख है। महाराज ने विवाह विष के समय जोले रंग का कहर पड़ताल जाता है। निषेध करके वह इस विष का अर्थ क्यों जानता है। जानके मंगल में भी यह प्रयोग है।

6) वर की सजा – भारत में वर का दस्तावेज स्थान रहता है और वह स्वाभाविक है। उस समय उसके वेशपुरित में उपस्थित और आर्थिक होता है। श्री भवानी मंगल में शिवजी का विवृत वेश देखकर मंगल की भीति का वर्णन है। उस समय पारंपरिक शिवजी के तुंगवर वेश चारण करने के लिए प्रार्थना करती है। प्रार्थना युक्त शिवजी ने तुंगवर वेश का चारण किया। श्री सदाशिव विवाह में शिवजी के चारण वेश का वर्णन करने के वाद विभु की प्रार्थना से शिवजी ने फिर मनोहर वेश लिया। मनोहर वेश को देखने के बाव सब लोगों की आत्मा इनपर लगी। लोगों को बहुत आनंद हुआ। तो वेश से देखकर लोगों को इनपर वेश की तारा आ गयी।

हरिस हरिस बंधे नर नारी, यह श्री वेश पुरारि।
नारि हर भलाकोंलाय, समस्त राख लघुय।
पत पीत नीति न पाय, यूग चरम को लघुय।
आशी रलरतात, सब मरहें सिंगार। 2०५। पृ. ४२
इस प्रकार समान्य मंगल कामों में वर की सजा का वर्णन मिलता है।

40) मंगल श्री सृजन सप्तसिंह।
41) साध्य रघुवर, पृ. १८४
42) वर विकार भवान मथन भीड़, अंગ्रेज़ बहुत दन्तारी नवन। पृ. ५
43) अन्धुत स्व व झों जियनाथि, लो फिर दराण न जास।।
तुंगवर वेश देखे शिवजीगे होन शिन गिरिजा वार।। पृ. ७८
(२४२)

7) सेहरा गाना — वर के यहाँ विवाह में गानेवाले मंगल गीतों को 'सेहरा गाना' कहा जाता है। मंगल गान गाने की प्रथा लगभग सभी मंगल काव्यों में पायी जाती है। गोस्वामी जूनीस्वामी के जानकी मंगल में यह प्रथा का वर्ण होता है। राम कथार्य में भी यह मंगल गान किया गया है। 'लक्ष्मी के मंगल' में (रघूराम सिंह कृत) अंबाग बार मंगल गान किया गया है। सुभाषिष्य मंगल में नया यहाँ पर इस प्रकार का वर्ण आया है कि मंगल गीतों के मुद्र खरों के बुनकर कोल भी अपनी सुरत का आभासन झोड़ देते। नवदास ने अपने सुभाषिष्य मंगल में भी मंगल गान अंत में भिजवा है। ताहते के सुभाषिष्य मंगल में 'मंगल' छुट भी है। स्वयं मंगल गीतों को गाने की विवेक का उत्तेजना भी मंगल काव्यों में भी भिजवा है। सुभाषिष्य रचित सुभाषिष्य मंगल में उदाहरण के रूप में इस आचार का वर्ण होता है।

8) तोरण बंधना — तोरण विवाह की लावन सामूहिक है जैसे यह आवश्यक न हो भी है। वर के विवाह के लिए तोरण और नाना प्रकार की विवाह परियोजनाओं के तत्तार योग्यता कारण है। उसके विवाह में उस तोरण के बंधना गाने प्राणक भिजवा है जैसे 'तोरण' बंधना कहते हैं। तोरण यह एक माध्यमिक विवाह है। इस रीति का दूसरा आर्य भी है।

42) कथा हरसिंह की मंगल गानी।

कृपा कृपा हरसिंह कल्लू क्यों लेरु चटावाहा। नानी मंगल पृ. 24
43) करिहं सुपृंगल गान उसे में भांग़ आन्द्र न जाए। नानी मंगल पृ. 15
44) भाँग गान पर मंगल गाना। तार कराओ सहितविचार। राम खण्ड पृ. 183
45) बेद बने जय बने रे हूँवारा। मंगल गान मनोबान को। पृ. 183
46) सुपृंगल मंगल मुखिन वलयाय। सुंदर मंगल गान करायो। पृ. 182
47) करिहं मुद्र स्वर मंगल गाना। सुमेधिक को तजहीं अभिमान। पृ. 189
48) चुन चिथं मंगल गान कराइ। बुधर चिथिनी बेद पंडार। पृ. 191
49) निश्चित चिथं मंगल गान कराइ। पृ. 191
50) अंग उतरने विवाह को रह दूं विना मुद्रार वहिवान। मंगल गानी। पृ. 1
(२४१)

'पुराने जमाने में स्वयंवर विवाह की रीति थी और सर्व रजनेवाले कम्या के लिए कर्ष उम्मीदवार होते थे और उनमें से जो परिवाराना उत्तीर्ण होता था तो इस विज्ञापनक बिनाक को तत्काल से घुट्ट कम्या के गुड़ में प्रवेश करता था। यदि तोरम कम्या के पर उम्म दरवाजा दो धमा के लिए बदल उसी बन लकार खारफ बांधता है। तोरण के गल्ल सुमस्त जैसी होती है। मंगल काव्यों में इस विधि की प्राधिक बहुत कम काव्यों में होती है। क्यों कि कर्ष कवियों ने सब प्रकार की विवाह के तैयारियों की तरीका इस प्रकार संवेश में वर्णन किया है जिससे 'तोरण वंदना' जैसी विविधता तो वर्णन नहीं मिलता है। रघुनाथसिंह श्रीमशी परिवार का परिष्करण बदल होने से उससे इस प्रथा का सम्पूर्ण वर्णन है तथा अन्य विविधों का भी वर्णन मिलता है।

१) मंडप छाना देश वेषिका निर्माण करना - विवाह के लिए बहर भाईवर पड़ती है। इस मंडप के बीच में वेषी बनाने का कार्य बड़ी सामान्यता से शुरू संभवतः दिखाया जाता है। गोष्टी मुसीबतों के लिए जानकी मंगल में इस रीति का वर्णन होता है। रघुनाथसिंह के 'राम स्वयंवर' में अनेक बार इस प्रथा का उल्लेख मिलता है। उनके सिच्छा मंगल में मंडप के खान पर प्रहर का कुछ भाग विवाह के लिए बसाया जाना है। उसके, इसी अच्छे अच्छे कारो-गरों को बुलाया और वघराहार के साथ रचना की। उससे 'कंचन चोथ' के रूप में वेषी की भी आयोजना की गयी। अकबरी दरबार के कच नरकर ने मंडप छाना।

-------

२) राजस्थान की रीति रित्य ते श्री. सुबबीरसिंह गानकोट, वन १९८४।
३) भिट दुंबर तोरण बैठवाये। मंडप भिट पताक बुढ़वाये। पु. १८०।
४) मंगल साज सका सजवाये। पंत बार बार बैठवाये। पु. १८४।
५) मध्यपूर्व कृष्ण काव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति - ते. डॉ. हरगुलाम १९४।

६) कपट नारी वर वेष विषाण मंडप गई। जानकी मंगल पु. १८।
७) मदत भरण रघुबीरसिंह मंडप ताल चौड़ी। जानकी मंगल पु. १९।
८) आयो ज़ब तम बुड़क कहत। मंडप तर वर बली उतारा। राम भर्य पु. १६२।
९) मंडप तर सुबबीर। मिन्नमिन तर आयो। राम भर्य पु. १६२।
१०) कारीगर न सुलाए, माड़ी मुनूल मिलत है। कपटी भरण धराय, गारोहन मंड- मय बनये। रघुबीरसिंह रित्य पु. ११०।
(२४४)

इस विषय का जरा सविस्तर वर्णन किया है। रामाल्लो ने अपने संस्कृत मंगल में अनुभूतों का संहार करने के बाद सब श्रीकृष्ण की यात्रा गाने लगे और बाद में विवाह
के लिये मार्होपुर नामक एक नगर भी बसाया गया, इस प्रकार वर्णन करके श्रीमान ने इंद्रोत्तेज की रेहा कहा है। अनेक काहियों में इस रिपोर्ट का वर्णन मिलता है।

१०) पानिग्रहण - विवाह संस्कार में 'पानिग्रहण ' महाविषय की विवेचना की गयी है।
इसमें यदि वाणी द्वारा हाथ अपने हाथ में लेता है। प्रति पत्ती का हाथ अपने हाथ में लेकर कहता है कि ' मैं सौभाग्यवान श्रीकृष्ण के लिये तेरा पानिग्रहण करता हूँ।
इम्यूनीनों अपनी अपनी शक्ति रखते हैं। तो शून्य अनुरोध पर्यंत हमारे मन प्रेमपूर्ण ,
विश्वास तथा प्रकाशमान रहे। पानिग्रहण कथा का अद्वित तथा मार्ग सौंपने का
प्रतीक है। यह अद्वित अद्वित महाविषय और प्रवाचन है, जों कि कथा केवल उसके
पिता बाबा ही नहीं, भगवान विश्व आदिक देवताओं बारा भी ही दुर्द समयी जाती
है, जो प्रत्येक गंगार अनुरोध के साथो हैं। इसलिये वैवाहिक जीवन सफल , उन्नति-
शीतल तथा आनंदपूर्ण बनाने के लिये पानिग्रहण यह जीवन का एक प्रतीक है। मंगल
काहियों में पानिग्रहण का विवाह मिलता है। राम क्षण्यवर वह इसका सही अलेख
मिलता है। रघुरामरसधे के संस्कृत मंगल परिणाम में अनेक विषयों का वर्णन है जिन्में
पानिग्रहण का भी वर्णन मिलता है। भी सवारिव विवाह में भी पानिग्रहण का उलेख
किया गया है। गोविता तुलसीदास के 'जानकी मंगल ' और 'पार्वती मंगल ' में
इस विषय को सुविचार किया है। अन्य मंगल काहियों में भी इसका वर्णन होता है।

११) कंवन गीतक मही बैठाई। लगे करावण कुरु मुखाय।
संस्कृत मंगल पृ १९१।
१२) उठे स्मार बल बोली श्री शंकर आयें। लोग कुरुब बल परिणाम निकट बोलायें।
कान नागी मंगल श्री आयाम लिंग है। बल चतुर्घाय शवारू हारेमुं ही रहें। बाहर
नगर गोरि को मंडप देरें। हाट बाट बुड़ो श्री मंगल गोदें। पृ १९४।
१३) ब्रह्मानुरे राम रामी चारे चारे बनो न जाय।
स, मंगल पृ २६।
१४) हसिया शंकर - हैं, राजबंपल पद्म - पृ २६५ - २६७।
१५) जनक तनक अव होक न देरी। पानिग्रहण यह तन निवेदी।
पृ १६५।
१६) तीठा अविश्वास लिये दिनें। करत भयों निचोसे पवनाला।
पृ १६५।
१७) तीठा विश्व यारित बनं को, यारित बुंदुमुखाय।
पानिग्रहण कर नाय गोरि, प्रभुविर निर्मित कुलराय।
पृ १५८।
१८) पानिग्रहण स्पष्ट निर्देश करायो। गोविता उचारण किये सुकायो।
पृ १५३।
(२४३)

११) अभिन धर्मक्रिया - पाँच धर्म के समान 'विवाह होम' और अभिन प्रवक्षण उनका महत्व है। इतिहास ने वैभव संसरों योगोपवीत, प्रशासनित तथा विवाह संसर आधि प्रसंगी में होम - हवन किया जाता है। मानव जाति ने पंच महामुत्तों में जो 'तेज' तन्त्र है उसके अभिन के बराबर अपने वैभविन जीवन में खान दिया है। अभिन लोगों ने अभिन का कृत्यत वान के ऊपर आपने आदर्श जीवन में खान दिया है। अभिन के साथ-साथ उसका पान करके विवाह संसर ये संसरों ने उसके साथ आदर्श वान संसर स्थापित किया है। हवन आदर्श को आध्यात्मिक की प्रेमा देना है। सत्यत्र के लिये, उन्नति के लिये, विकास के लिये, जाति का हृदय करना और दूरसरी के लिये सत्य स्वतंत्रता रहने की प्रेमा लेना होम का गूढ्याक है। विवाह में धेरे जीवन दूरसरी के लिये भी है इसके प्रवक्षण ते ती जाती है। प्रवक्षण अभिन में है जिसे वैभवित धेरे का सर्वाधृत विकास करता था। अब धेरे जीवन परिवर्तित अभिन के साथ में व्यापक की जाती है। इसीलिए हवन के धेरे प्रवक्षण तैयार प्रवक्षण की जाती है। प्रवक्षण में दोनों के दो तरीके और निरामय धेरे की आध्यात्मिक राही जाती है। इस अभि प्रवक्षण को हर धेरे जाता है। धेरे जानकी मंगल में तुलसीबाबसी ने कहा है - दिसंद वर्ण होम लावा होम लगा धेरे जाती। प. ४१ राम चर्चवर में भी इस प्रवक्षण की ओर संकेत किया है। विवाह धेरे तुलसीबाबसी महाराण धूली धेरे जैन मंगल में अभिन होम का वर्ण है और उस समय परेड का वर्ण भी विस्तार के साथ किया है। परेड का यह विवर राजस्थान में विस्तार किया है। महाराण हूं धेरे यह विवरे की जाती है। इन परेडों के समय वृद्ध का पिता पति पति होकर हर परेड लेते समय कुछ उपहार भी के किया जाता है। रात, मोहियों की माता, नवलख, मेह मानिक आदि अन्यथा चोरे करे का वर्ण मिलता है।

---

९९) सुनेश धर्मानंद साथर कहावत दरे वर भावरी।। पृ. १६०

००) सिद्ध भावन रुपावति भावरी ताजा परोसन हूं भरो।। पृ.१६६

११) अभिन होम तब सत्य भगवान, कीमा मंगल उचार। पारमबिक करभे, परेड तीराधार। परेड अब ते हैं शिवृपर, संस मंगल गाबनार। पहला परेड सिंवनशीरा, कीमा रतन अपार। शंकर शेजा केरालीना, कीमा मोहियों की गलमाल। परेड शेम तीजो तीजो, नवलख बियो गिरिहर। चोरे परेड कीमा मेह मानिक, संस कुंड पिये शिवृपर। परेड तेर तिलाशान बदले, निज किन केला नितार।। पृ. ८२
12) सत्यत्सी - इस विवेच में पीत पल्ली को सात पग चलता है। जीवन एक बंधावात है। इसके साथ अपेक्षा आदमी मुकाबला नहीं करता। कभी कभी दरज का वापस भी दूर जाता है और जीवन मार्ग भी मूल जाने की संभावना होती है। इसलिये जीवन रात्रि की जहरत है। विवाह संपात्र इस कुटी की पूर्वत करता है। रात दूसरे का हाय पक्क कर आदमी जीवन मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। दोनों में कोई भी केंद्र कोशिश नहीं है। कोई सेवा नहीं, सेवक नहीं। दोनों रात दूसरे मार्ग के बुद्धत्त कैमर नहीं है। रात दूसरे का हाय पक्क कर आदमी जीवन मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। दोनों में कोई भी केंद्र कोशिश नहीं है। कोई सेवा नहीं, सेवक नहीं। दोनों रात दूसरे मार्ग के बुद्धत्त कैमर नहीं है। रात दूसरे का हाय पक्क कर आदमी जीवन मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

गांधी जी का विचार है। विवाह भोग न होकर सावना बोली चाहिए। रवीन्द्रनाथ टागोर जी ने भी दूसरे मार्ग में कहा है--

"My Last Salutotions are to those who knew me imperfect and loved me."

60 मंगल काव्यों में इस सत्यत्सी का उल्लेख मिलता है। सीमशी मंगल परिणाम में रघुनाथ लिङ्गी ने इस विषय का वर्णन किया है। राम ख्यातवर में भी इस प्रेम का दर्शन होता है। सीमशी मंगल में इस विषय की ओर अप्रत्यक्ष रूप से संकेत किया गया है।

इस प्रकार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस विषय का वर्णन मिलता है।

61) तव स्मरण समये जात: सच्चे मूला फिसे तेपयहूँ। साजिश नाथ। बधाश्च
भूला मनुकिन्द्र।। न तवं में तिकम नुका नत्वा ह मनुकिन्द्र।।।
प्रीति: शांति: सुखि तेन दुमुखोऽक्ष भविष्यति।।
62) सत्यत्सी बुद्धत्त कार्यार्थ। पूण्यविष्णु लावा जस्वाह।। पु. १९१
63) याद भूलक सत्यत्सी कार्य कुमार गोतम के मुख।। पु. १६७
64) जो कुछ कुछ के रीति रसमात्र रचते राधा करबाले।। सीमशी मंगल
65) पु. २५
11) जुधा खेलना और गाली गाना - विवाह के बाद व्यू हो यहाँ वर के जुधा भी खिलाया जाता है और विवाह के अनेक बुद्धियों पर खिलाय क्षारा गाली गाने का प्रयास प्रारंभित है। स्वदेशी रचित संबंधी मंगल में यह विवेक संस्टां शब्दों में वर्णित है। श्री महानी मंगल में भोजन के बाद पान उपवास का कार्यक्रम हुआ। उपरोक्त वेदों ने कहा कि अब जिरफ जाने के माय जुधा खेलना का कार्यक्रम हो। कार्यक्रम शुरू हुआ जिसमें बिजलियों असफल हुआ और रमण के जुड़े में भी पार्श्वी की जीत हुई। इस विषय के मूल में स्थान बनाने की अवसर आया है। व्यू और वर ये दोनों विलुप्त अपरिवर्धित होते हैं। अभी ये दोनों आसमान जीवन के साथी हो गये हैं। इन दोनों ने लाज का अपरिवर्धित का जो परवा होता है वह श्रीरे श्रीरे दूर हो जाय और दोनों निकट आ जाय।

' गाली गाना ' इसका अर्थ विवाह में गाली भरे गीत गाना। विवाह में कर्म विनियम गंगौर होती है। तो कर्म विनियम सामाजिक ने लिए होती है। ' गाली गाना ' यह उस प्रकार का एक विनियम है। यह उसी-विनियम की एक रूप है। इसमें माता के संबंध डू से की अनुचित बात कहकर वर व्यू के तौर पर उन्हें कहा जाता है। श्री जानकी मंगल में इसका पूरा वर्ण तुलनात्मक ने किया है। चुनूर विनियम कि प्रस्तुत में कभी कभी वर और व्यू पर छलांग खिलाया गया है। और वर कह यह एक दूसरे के सब्ज में कोई छिलकोट की या तारी दोनों बिजलों की पशु कही है। इसमें विनियम हार जीत का बहाना करता है और दूसरों को गालियाँ देती है। उस समय कोस्सता और युवनता ने माता रामनी ने गालियाँ बोली हैं। ये दोनों विनियम शाखागुणोद्धारित नहीं है। फिर क्यों तो दो दृष्टि द्विपद्व से इनका महत्त्व है जो मंगल सब्जों में प्रकृत स्थान में मिलता है।

71) मध्यगृहेन्द्र कुमार कायक में सामाजिक जीवन की सहीदियत – तृत. इरगुलाल छ. 111 72) छल कलकर कंगना अंत गाली हंसत कुंडलपुर नारिए। चुनूर ज्य ग्याँ मिलित ध्येलत दून ज्या पर्याप्त।। छ. 11 73) चुनूर नारिए वर कुंडलपुरी रीति पियारिए। बेदिंग गारिलकोर वर कुंडल पाविए। 144। जुधा खेलावन कोतुक कोर मिल ज्यांनि ह। जीत हारि मिलबेडिंग गारि हुड़ू रामनि ह। 150। गो. तुलसीबाई, जानकी मंगल, छ. 42
(१४८)

१४) द्रैवेण देना — द्रैवेण की प्रथा प्राचीन काल से गुरू है। तेकिन यह प्रथा संपूर्ण स्थान से लेखनीय है। कथा का वाण करते समय जो जन किया जाता था वह कथा जन कलाता था। इस्का रुक दृश्य स्पष्ट है। श्री जानकी मंगल में जनक ने द्रैवेण के स्थान पर अनेक वस्त्रुप वर दिया। श्री महानी मंगल में दिमालय ने विवाह के समय द्रैवेण के स्थान पर — एक हजार हाथी, एक लाख गोरे, तीन लाख घोड़े, एक लाख गायी, राते से धेरे रघु चार हजार — आदि वस्त्रुप प्रदान की। पार्वती मंगल में भी दिमालय से अनेक वस्त्रुप देने का वर्णन मिलता है। अन्य मंगल कथाओं में भी द्रैवेण का वर्णन किया गया है।

लक्ष्मी मंगल परिषद में संबंध में अनेक विवाहों का ऊँचा रचना पर किया है। किसी भी शासित कृति में गये कान किया जाता है। लोगों ने ' विवाह ' में ग्राहक का विचारदार के स्थान पर वर्णन किया है। ' पुष्याधार वाचन ' यह भी रुक शासित विवाह के जाता है। गुरू प्रेम, कविर नोबन, मधुरपुर, सिंहत राज, मंगलमुख रूपम और चन्द्रसूत तम शासित विवाह की जाता है। इनमें विवाह का जो समारोह होता है वह अत्यंत भावपूर्ण होता है। अन्य कथा को परकथा मानना अव तक व्यवहार चलता था तेकिन आज वह पूर्व स्थान पर परकथा नहीं हो गयी। इससे कथा विवेष का हुब्ब परम्परातीत है। वह माँ बाप का भूदेश ही जान सकता है। कविता जैसे श्रीयतार गुनियों में भी इसका अनुमान किया है। ' दीपिकाये गुजिंस कर्यनू तनया विजेताहुः हुःके-निन्दी ' गाँकु, अङ्क ४। विवाह का वर्णन जानकी मंगल में बहुत ही उद्धित रही में किया है। सब के भूदेश कथा भाषण हो गये। नगर के चुपके, पिकाय, पोहेड़, कायी

---

७९) महायुगोन कृष्ण कथा में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्तिक — डा. हरगुलाल, पृ. १२२

८०) बाजन भयंकर विविध विविध जान नसा गान। हासीदास बाजन गान हेम सान गान। पृ. ३४

८१) प्रथम गारु गृहन करवायो। यथार्थ गारु सब सुरंग पुजायो। वहु विविध मंगल

गान कराई। बहुरी शिक्षक से भूव पदवई। सबल ब्याह विषय स्रामम भावर।

cर्वारे ताड़ गारु उदारा। प्रभृतिरहु प्रकार।

गोल उदारार्थ कियो मुहायो। संतानिह्वर करवाई। प्रभृतिरहु तारा पलसर।

१० चन्द्रसूत आशिक चार। करवाई मुनियही। पहार। ।

लक्ष्मी मंगल परिषद पृ. १२१
(२४९)

पकी जोर मुग सभी ब्याकुल हो उठे । जनक की अवस्था भी बहुत गोचरीय हुई । अंत में तुलसीदास ने कहा कि विद्वान के समय विषोध की सवत्था के बारे में कुछ कहते नहीं बनता , संपूर्ण तोक-कस्बा से मर गये ।

राजस्थान के मंगल काव्यों में भोजन के पदार्थों का जो सबस्त वर्ण मिलता है उतना अन्य मंगल काव्यों में नहीं मिलता । उस वर्णन से उस काल के पक्षान्तों की कथना आती है । श्री भवानी मंगल में वर्णन आता है ।

तु समद्वभ मर्न मतवारी , बोधा भात घडावा ।
माण्डके नर नाहर बोरो , बैठी बसात छोडावो ,
ब्रह्मा सहित सकत जग बौधो , बोधा बी प्रहमचारी ।
छटा चैता पेशरलाल , छटी मगव पकावो
छटी शर हवेसं खाजा , शरो छटी पृती खायो ।
रायता छुटा बट रस छाया , छुटी साबूनी ताहारी । प.८५
छटा सुमाल विश्वेकितरसी , छुटा पुरार्पितारी
छटा पायर बड़ा क्वोरो , छुटा याग तरफारी
छुटी सरस सकती भिजार , छुटी जलकी इत्तारी
या विनोभ भात छोडाव होरने बीछा बंध युगाया । प.८५

धातुमार्ग परोलने के बाब स्री पुरुषों की पक्षान्तों को झोंकने छोड़ने की जुगलबंबी होती

(२५२) गवगव कंठ नवन जल उर शर शरजरहै ।
कुर्पितिवु दुस्सिनुदु युजन निरोमन ।
जानकी मंगल , तुलसीदास
तात समय युज गुरी छोड़ भाव जीव । प.४६

(२५३) सो समो कहत म बनत कहु सब मुजव मरे कलतार रहे ।
श्री जानकी सुबंधन - प.४९
(२५०)

है। सांगित सोकाणी मंगल में भी अनेक विषयों का सुरस वर्ण मिलता है। इस प्रकार वंक्ष कोहर, वंक्ष मोहन, बरात आदि अनेक विषयों का संक्षिप्त वर्ण मंगल कायम में मिलता है। वास्तव में इस पंचाम अध्याय तक हिंदी के अध्ययनार्थ लिये गये मंगल कायमों का विविध पहचानके दृष्टि से अध्ययन पुरा होता है। किंतु हिंदी के इन मंगल कायमों के पूर्वविंत मंगल कायमों से संबंध जब तक वर्तमान अध्ययन से न जोड़ा जाय तब तक इस अध्ययन का मर्म उत्पाद न लगेगा इसलिये अगले अध्याय में हिंदी के पूर्वविंत मंगल कायमों का अध्ययन किया जा रहा है।

(८४) कंवन बारी रतन क्योऽी सुवर्ण धाल सजाये।
ब्योजन विचित्र परीसन लगे अति स्वादिष्ट पुढ़ये।
मोहन भोग इमरती बुलता बुरा मार सुधाये।
सोखन मोतीचुंब मनोदर देवा हार बनाये।
मोखन डंगो भरूँ देवा होढ़र ठार भराये।
बुरवन रबड़ी दूष मलाई कलाकाष मन भाये।
सैनी और जलसी वधर मटरी सेव सुधाये।
पूरी बस्सा नरम वेदर्श दालमोठ परसायो।
सोरु दुःहरे बदे पकोड़ी पापद लते तलाये।
कल्याण बढ़ा भगिरी टिकिया रसगुल्ला बरसाये।
वारक नीचू मिलरिंद सोड़ा आम अंगार बनाये।
कटकर बढ़हर भिंडी अरबी कालिफ मन भाये।
आते बेंगान नृत्य मंडी भाग अनेक छुकाये।
बीठे और नमकीन बाँधे गाढ़ी बढ़ी नमाये।
चिल गोणा बाबाम दुःहरे विस्ता क्षामित भाये।
कवरी मूल अंगूर शतरा सेव आम बढ़खाये।
मिरजौनी जलजिरा बटनी चुरन चाट चटाये।
नाम अनेक कहाकर बरनु वीर संकेप सुनाये। । वाणिज्य तृ. मंगल पृ.४५